

- : ओ३म : -

वेदवाणी

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट (अमृतसर) की मासिक पत्रिका

वर्ष ५१]

वर्ग जयम (ऋक्)

[अङ्क १

—: वेदवाणी-स्वर्णजयन्ती :-

वेद-परिशीलन विशेषाङ्क



प्राद्य सम्पादक— श्री पं० ब्रह्मदत्त जो जिज्ञासु, द्वितीय सम्पादक—श्री पं० युधिष्ठिर जी मोमांसक

सम्पादक—विजयपाल विद्यावारिधि

सहसम्पादक—प्रदीप कुमार शास्त्री

कार्तिक सं० २०५५ वि०

नवम्बर १९९८ ई०

दयानन्दाब्द १७३

वेद तथा सृष्टि सं० १९७२९४९०९९



वार्षिक मूल्य भारत में ४०.००

„ „ विदेशों में १६०.००

आजीवन सदस्यता शुल्क ४००.००

इस अङ्क का ५०.००

वेदवाणी कार्यालय,
बहालगढ़, (सोनीपत-हरयाणा) १३१०२१

दूरभाष—(०१२६४) ८३१३८

वेदवाणी-स्वर्णजयन्ती वेद-परिशीलन-विशेषाङ्क

की विषय-सूची

लेख-शीर्षक

लेखक

पृष्ठ

१. वेदवाणी-पादकीय
२. वेदव्य गुणों से युक्त जनता राष्ट्र का सन्मन करे
३. वेद का प्रकाश वा उत्पत्ति
४. वेदाविर्भाव पर मतवाद
५. वेदों की नित्यता
६. वेद की अपौरुषेयता
७. वेद-परिचय
८. वेद की शाखाएं
९. वेद की व्याख्या और उसकी परम्परा
१०. वेद, वेदार्थ और वैदिक देवता
११. वेद-ग्रन्थों के नवीन अभ्यास की पद्धति
१२. वैदिक साहित्य में पाश्चात्य विद्वानों का कार्य
१३. वेद और विदेशी विद्वान्
१४. वेद और विज्ञान
१५. उपनिषद् और वेदार्थ
१६. वैदिक साहित्य के पाश्चात्य लेखक
१७. वैदिक परिभाषा में शरीर की संज्ञाएं
१८. दशमे मासि सूतवे अर्थात् बालक के गर्भवासकाल...
१९. वेदों में पुनरुक्ति दूषण नहीं भूषण है
२०. आयुर्वेद के एक मन्त्र पर विचार
२१. पर्यावरण-प्रदूषण की रोकथाम का वैदिक.....
२२. वेद में अघ्न्य एवं अघ्न्या शब्दों का प्रयोग.....
२३. वेद में 'हरियूपोया' शब्द का वास्तविक तात्पर्य
२४. यज्ञार्थ यजुर्वेद का निर्माण
२५. वैदिक कर्मकाण्ड जगद्वचना च
२६. वसुधैव कुटुम्बकम् मन्त्रों की यज्ञभावना कर्मयोग की वैदिक पीठिका
२७. अथर्ववेद में ज्योतिष के तत्त्व

विषय	शुरू में
वैदिक विनय से	१
प्रो० राजाराम शास्त्री	३
पं० मधुसूदन श्रोभा	६
पं० सकल नारायण शर्मा	१०
डा० गङ्गानाथ भा	१३
पं० महेन्द्रमिश्र	१४
पं० बलदेव उपाध्याय	२१
प्रिंसिपल विधुशेखर भट्टाचार्य	२६
आचार्य आनन्दशङ्कर	३८
डा० श्रीधर वेङ्कटेश केतकर	४३
डा० मङ्गलदेव शास्त्री	४६
डा० हरदत्त शर्मा	६४
पं० कालीचरण भा	७७
पं० चन्द्रकान्त जी	८३
पं० वीरेन्द्र शास्त्री	१०३
डा० वासुदेव शरण अग्रवाल	११७
श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक	१२४
श्री अर्जुनदेव स्नातक	१३२
स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	१३६
डा० रामनाथ वेदालङ्कार	१४४
श्रीमती डा० सुखदा आर्य	१५३
डा० शिवपूजन शास्त्री	१६१
श्री वी० उपेन्द्रराव	१६७
डा० गणेश उमाकान्त	१८१
प्रो० इन्द्रवन् बी. रावल	१८४
डा० जितेन्द्र कुमार	१८८

२८. हे घरतो, हे आकाश !
 २९. सोमस्य वेदप्रतिपादितं स्वरूपम्
 ३०. महर्षिदयानन्दकृतवेदभाष्यानुशीलनम्
 ३१. अथर्ववेद में सप्तर्षि
 ३२. ऋग्वेद में गत्यर्थक 'ऋ' धातुओं के प्रयोग
 ३३. अग्नि विद्वान् है
 ३४. यज्ञ से कृषि को लाभ
 ३५. वेदार्थ की मध्यकालीन तथा पाश्चात्य पद्धतियां.....
 ३६. उपनिषद् : वेद
 ३७. वैदिक साहित्य में नारी के विशिष्ट रूप
 ३८. 'सर्वमेध' यज्ञ का आध्यात्मिक स्वरूप
 ३९. वैदिक सुरा
 ४०. अनार्य तथा ऊनार्य-द्राविड़
 ४१. वेदमन्त्रेषु राष्ट्रिय-भावना
 ४२. निरुक्तकार यास्क द्वारा प्रदर्शित वेदव्याख्या की विधायें
 ४३. नदीसूक्त : विश्वामित्र और नदियों का संवाद
 ४४. समाचार-संग्रह
 ४५. विज्ञापन (वेदमन्त्र व्याख्या सहित)

डा० श्रीमती प्रवेश सक्सेना	१९३
डा० जयदत्त उप्रेती	२०१
डा० रघुवीर वेदालङ्कार	२१२
ब्र० बलदव	२१७
डा० सत्यदेव निगमालङ्कार	२२४
डा० कृष्णलाल	२२७
डा० उर्वी	२२८
डा० भवानीलाल भारतीय	२२९
डा० अनन्त शर्मा	२३०
डा० मञ्जुला गुप्ता	२३१
डा० राजेश्वर मिश्र	२३२
सुश्री सूर्याकुमारी	२३३
पं० रमेशचन्द्र शालीहास	२३४
प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री	२३५
ब्र० धर्मेश शर्मा	२३६
श्री वेदमुनि	३००
	३१४
अन्त में	



भगवान् कृष्ण उवाच—

यज्ञार्थात् कमर्णोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
 तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥

भगवान् कृष्ण बोले—

हे अर्जुन ! 'इदं विष्णवे, इदं न मम' यह वस्तु (अथवा कर्म) प्रभु के प्रीत्यर्थ है, यह मेरी नहीं है—यह यज्ञ-भावना है। इस भावना से दिया गया दान (अथवा किया गया कर्म) मनुष्य को सांसारिक बन्धन में नहीं डालता। इस भावना से रहित कर्म मनुष्य को संसार-बन्धन में डाल देता है। इसलिए आसक्ति (ममत्व) से मुक्त होकर यज्ञ-भावना से कर्म को सम्पन्न कर।

यज्ञ से कृषि को लाभ

[ले०—डा० उर्वी, प्रवक्ता संस्कृत श्री वेङ्कटेश्वर महाविद्यालय धौला कुआँ, नई दिल्ली]

भारत एक कृषिप्रधान देश है। यहां कृषि से लगभग ७० प्रतिशत जनता को आजीविका प्राप्त होती है तथा इसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (३२.६८ करोड़ हेक्टेयर भूमि) के लगभग ४१% भू-भाग (१३.६८ करोड़ हेक्टेयर भूमि) में कृषि होती है (भूगोल पृष्ठ ४१३)। इसी कृषि से अन्न की उत्पत्ति होती है जो मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक है। अन्न ही प्राणियों का प्राण है।^१ प्राणों के संरक्षण के लिए कृषि कर्म को हम जितना अधिक विद्या, विज्ञान, विवेक और पुरुषार्थ के साथ करेंगे उतना ही अधिक और उत्तम अन्न-उत्पत्ति का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। वेद कहता है कि हम उत्तम अन्न की कृषि करें एवं करायें।^२ यहां तक कि काम न करनेवाले जुआरियों को भी कहा गया है कि हे जुआरियो ! जुआ मत खेलो, कृषि करो।^३ कृषि कार्य करनेवाले को विद्वान्, योग्य, गम्भीर, विचार गुणयुक्त होना चाहिये।^४ हल चलानेवाले को कवि (क्रान्तदर्शी), भविष्य-ज्ञाता, दूरदर्शी, धीर, बुद्धिमान् तथा कृषि-विद्या को जाननेवाला कहा गया है।^५

दरिद्रता के नाश करनेवाले सर्वप्रथम व्यवसाय खेती के लिए वेद कहता है कि खेत के स्वामी के हित के लिए हम गाय, घोड़े और पोषक पदार्थ देते हैं, उसी प्रकार यह किसान भी हमें सुख प्रदान करे।^६ हे कृषक ! धनपति ! आप गो-दुग्ध की भांति मीठा पवित्र जल दूध और शुद्ध अन्न हम सब में वितरित कीजिये।^७ सभी कुछ शुद्ध हो इसके लिये यह आवश्यक है कि इन वस्तुओं के लिये सभी साधन अनुकूल हों अर्थात् उत्तम औषधियां, द्युलोक, जल और अन्तरिक्ष अनुकूल रहें, जिससे क्षेत्रपति हमारे लिए मधुर हो सके और सज्जन उसके अनुकूल रहें।^८ सभी कुछ अनुकूल रहेगा तो एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होगा। कृषि के लिये आवश्यक सभी साधन उत्तम कोटि के हों जिससे वे उत्तम अन्न प्रदान कर सकें। बैल, मजदूर, हल के अङ्ग, रस्सी आदि सब सुखकारी हों और खेती के अन्य अवयव भी सुखकारी होकर चलाये जायें।^९ खेती उत्तम प्रकार से सम्पादित

१. अन्नं ह प्राणः । ऐ० ब्रा० १।१७।५।

२. सुसस्याः कृषीस्कृधि । यजु० ४।.०।

३. अक्षर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व । ऋ० अक्षसूक्त १०।३४।.३।

४. धीरा युञ्जन्ति कंवयो युगा वितन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुमनया ॥ यजु० १२।६७।

५. क्षेत्रस्य पतिना क्वयं हितेनेव जयामसि ।

गामश्च पोषयित्वा स नो मृळातीदृशे ॥ ऋ० ४।५७।.१।

६. क्षेत्रस्य पते मधु न मूर्ध्नि घेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व ।

मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य न पतयो मृळयन्तु ॥ ऋ० ४।५७।.२।

७. मधुमतीरोषधीर्वाव आपो मधुमन्त्रो भवत्वन्तरिक्षम् ।

क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिध्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥

८. शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।

शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ॥ ऋ० ४।५७।.३।